हिंदी (लोकभारती)

अभ्यास के लिए कृतिपत्रिका 4 के उत्तर

प्र. 1. (अ)

(1) **कवि लपकानंद ने यह कहा –**

- मैं पिछले चार-पाँच दिनों से कवि सम्मेलनों में व्यस्त था
- मैं आपके (लेखक के) बारे में ही सोचता रहा
- रात भर मुझे नींद नहीं आई
- रात को इसी संदर्भ में यह कविता बनाई

(2)

(i) **कवि लपकानंद के विषय में लेखक ने यह बताया –**

- कवि की बेतुकी कविताओं से सारा शहर परेशान है
- लेखक उन्हें दूर से देखते ही भाग खड़ा होता है
- जब भी मिलेंगे दस-बीस कविताएँ पिलाए बिना नहीं छोड़ेंगे

(ii) **कवि से छुटकारा पाने के लिए लेखक ने यह किया –**

- उन्हें जल्दी से चाय पिलाई
- कविता सुनने का वादा किया

(3) (i) **बे** — उपसर्गयुक्त शब्द ← दर्द → प्रत्यययुक्त शब्द — **नाक**

(बेदर्द) (दर्दनाक)

(ii) **अ** — उपसर्गयुक्त शब्द ← निश्चित → प्रत्यययुक्त शब्द — **ता**

(अनिश्चित) (निश्चितता)

(4) कवि दो प्रकार के होते हैं। एक वे, जो सचमुच कवि होते हैं और अपने विचारों को मथकर उन्हें सुंदर और सुरुचिपूर्ण शब्दों के माध्यम से कागज पर उतारते हैं। उनकी कविता सुनकर श्रोता को आनंद के साथ-साथ एक दिशा भी मिलती है। दूसरे प्रकार के कवि वे होते हैं, जो अंत:करण से कवि नहीं होते। वे जबरन कवि बनकर कविता लिखना चाहते हैं। इनकी कविता, कविता न होकर शब्दों का बेतरतीब समूह होती है। जोड़-तोड़कर कविता तैयार करते ही ये श्रोता की तलाश करने लगते हैं और जो भी सामने मिल जाता है, उसे अपनी कविता सुनाए बिना नहीं छोड़ते। इनकी कविता सुनने के लिए कोई आसानी से तैयार नहीं होता। पर विद्वान कवि कभी अपनी कविता सुनाने की कोशिश नहीं करते। उनकी कविता सारगर्भित होती है और वे हर किसी को कविता सुनाते नहीं फिरते।

प्र. 1. (आ)

(1) **गद्यांश में उल्लिखित कोई चार रचनाकार –**

- प्रेमचंद
- शरतचंद्र
- बंकिमचंद्र
- प्रभातकुमार मुखोपाध्याय

(2)

(i) नागर जी के सामने इनका साहित्य था – प्रेमचंद और कौशिक का

(ii) नागर जी ने शुरू में इन्हें पढ़ा – बंकिम के उपन्यास

(iii) नागर जी का पहला मित्र यह था – छापे का अक्षर

(iv) नागर जी की पहली कविता का शीर्षक यह था – 'कब लौं कहौं लाठी खाय!'

(3) (i) अनु + शासन = अनुशासन

(ii) उप + वन = उपवन

(iii) आ + जीवन = आजीवन

(iv) अभि + मान = अभिमान।

(4) जीवन में शिक्षा का बहुत महत्त्व है। पढ़ाई-लिखाई से ही बुद्धि का विकास होता है। बड़े-बड़े पदों पर आसीन व्यक्ति पढ़ाई के बल पर ही शीर्ष पर पहुँचे हैं। जीवन में मनुष्य को जीविकोपार्जन के लिए कोई-न-कोई काम करना ही पड़ता है। धंधा-व्यवसाय करना हो, नौकरी करनी हो या अन्य छोटा-मोटा काम करना हो, शिक्षा प्रत्येक स्थान पर आवश्यक होती है। शिक्षा प्राप्त करने पर ही कोई व्यक्ति एक आदर्श, जागरूक एवं सफल नागरिक बन सकता है और अपने पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों को पूरी तरह निभा सकता है। शिक्षा हर तरह के शोषण से व्यक्ति की रक्षा करती है। शिक्षा से ही मनुष्य में उचित-अनुचित में भेद करना आता है। शिक्षित मनुष्य अपने साथ-साथ दूसरों को भी उन्नति की ओर ले जाता है। आज देश में उत्तम शिक्षा प्रदान करने की सर्वत्र पर्याप्त व्यवस्था की गई है। हमें इसका लाभ उठाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार शिक्षा अवश्य प्राप्त करे और जीवन में आगे बढ़े।

प्र. 1. (इ)

(1) (i) **संन्यासी के लिए इन दोनों में कोई अंतर नहीं था –**

- मृत मृग का शरीर
- घास का गट्ठर

(ii) **गद्यांश में इन दो व्यक्तियों का उल्लेख हुआ है –**

- संन्यासी
- राजकुमार

(2) वन ईश्वर द्वारा दिए गए प्राकृतिक संसाधनों में अति महत्त्वपूर्ण हैं। ये हमारे जीवन का अभिन्न अंग

हैं। वन वातावरण में व्याप्त विषैली वायु को ग्रहण कर उसे स्वास्थ्यप्रद प्राणवायु में बदल देते हैं। इसलिए इन्हें पृथ्वी का फेफड़ा कहा जाता है। वन वर्षा लाने में सहायक होते हैं। वनों के कारण भूमिगत जल स्तर में वृद्धि होती है। वन प्रकृति की अनुपम सौगात तो हैं ही, ये हमें विभिन्न प्रकार के संसाधन भी प्रदान करते हैं। वन हमें अनेक प्रकार के फल-फूल, औषधि, इमारती लकड़ी, ईंधन आदि देते हैं। वनों से प्राप्त लकड़ी से ही कागज तथा खेलों की सामग्री बनाई जाती है। वनों से हमें खनिज और पशुओं के लिए चारा भी मिलता है। वन अनेकानेक प्राणियों का निवास स्थान है। ये वन्य जीव वनों की शोभा होते हैं।

प्र. 2. (अ)

(1) (i) (1) कृषक कमजोर शरीर को पत्तियों से पालता है।

(2) कृषक बंजर जमीन को अपने खून से सींचकर उर्वरा बना देता है।

(ii) **कवि की चाह –**

- विश्व के पालक कृषक के लिए नवीन सृष्टि का निर्माण करना
- सभी सुर-असुर छोड़कर ऊसर भूमि को उर्वरा बनाने वाले कृषक का ध्यान करना
- एक-एक कण जोड़कर कृषक के लिए नीड़ का निर्माण करना

(2) (i) पालक = पाल + क (ii) मनुजता = मनुज + ता

(iii) पीड़ित = पीड़ा + इत (iv) जोड़कर = जोड़ + कर।

(3) कृषक संपूर्ण संसार का अन्नदाता है। वह अन्न उगाकर पूरे विश्व का पालन करता है। लोगों को जीवन देता है। किंतु अफसोस की बात है कि जिन लोगों को वह पालता है, उन्हीं के द्वारा उसे पददलित किया जाता है। अपमानित किया जाता है। मैं चाहता हूँ कि मैं कृषक का हाथ पकड़कर एक नवीन सृष्टि का निर्माण करूँ, जहाँ लोग उसके महत्त्व को समझें। उसका सम्मान करें। मैं कृषक के गीत गाना चाहता हूँ।

प्र. 2. (आ)

(1) (i) (1) फूल को मौसम से कुछ लेना-देना नहीं है – उसे अपने अस्तित्व के लिए कुछ भी पाने की इच्छा नहीं है। इसलिए कैसा भी मौसम हो, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता।

(2) पिचकारी का जादू-टोना फूल पर कोई अंतर नहीं लाएगा – फूल को कृत्रिम फुहारों की कामना नहीं है। इसलिए पिचकारी का जादू-टोना फूल पर कोई अंतर नहीं लाएगा।

(ii) **फूल के लिए ये दोनों एक जैसे हैं –**

- भौंरों के कोमल सुर सरगम
- पतझारों का रोना-धोना

(2) (i) आएगा-जाएगा (ii) रोना-धोना
(iii) जादू-टोना (iv) पल-पल।

(3) चाहे फूल की कोमल-कोमल पंखुड़ियों पर भौंरों के गुंजन का सरगम सुनाई देता हो अथवा पतझड़ का मौसम हो और वह मुरझाई हुई दशा में हो या उस पर कृत्रिम फुहारें डालकर उसे सांत्वना दी जाए, उस पर कोई फर्क नहीं पड़ता। फूल अपनी बोली लगाने वालों और पल-पल अपनी कीमतें आँकने वालों को संबोधित करते हुए कहता है कि मैंने अपने आप से अपने स्वाभिमान का अनुबंध कर लिया है और यह ठान लिया है कि मैं अपने स्वाभिमान पर कभी आँच नहीं आने दूँगा। मैं उस अनुबंध को किसी भी हालत में दाँव पर नहीं लगा सकता अर्थात मैं उसका कभी सौदा नहीं कर सकता।

फूल कहता है कि वह अपनी सुगंध कभी नहीं बेच सकता।

प्र. 3. (अ)

(1)

सिरचन को आने वाले काम –

- मोथी घास और पटेर की रंगीन शीतलपाटी बनाना
- बाँस की तीलियों की झिलमिलाती चिक बनाना
- सतरंगे डोर के मोढ़े बनाना
- भूसी-चुन्नी रखने के लिए मूँज की रस्सी के जाले बनाना

(2) कोई कार्य करने और तन्मयता से काम करने दोनों में फर्क होता है। साधारण ढंग से कोई कार्य करना किसी काम को जैसे-तैसे पूरा कर देना होता है। जबकि तन्मयता से काम करने का मतलब है किसी काम को रुचि से, उसके प्रत्येक अंग पर बारीकी से ध्यान देकर श्रेष्ठतम ढंग से करना। इस तरह का काम तब होता है, जब काम करने वाला व्यक्ति उसमें तल्लीन होकर काम करता है। तल्लीनता से काम करने पर व्यक्ति में निपुणता आती है और वह अपने काम में विशेषज्ञता प्राप्त कर लेता है। विशेषज्ञ व्यक्ति अपने क्षेत्र के सफल व्यक्ति कहे जाते हैं। ऐसे सफल व्यक्ति शिक्षा, राजनीति, व्यवसाय, तकनीक और समाज सब जगह दिखाई देते हैं। ये सब अपने क्षेत्र में तल्लीनता से कार्य करने के कारण सफल हुए हैं। इनसे हमें शिक्षा लेनी चाहिए और अपना काम तल्लीनता से करना चाहिए।

प्र. 3. (आ)

(1)

चरित्र	विशेषताएँ
ध्रुव	इस मिट्टी में खेलने वाला
प्रह्लाद	लगन का सच्चा (सच्ची लगन वाला)
भरत	शेर के जबड़े में दाँत गिनने वाला
जयमल-पत्ता	अपने पराक्रम के आगे किसी को न गिनने वाला

(2) शेखी बघारने का मतलब है हर किसी के सामने बढ़-चढ़कर अपनी बड़ाई करना। कुछ लोगों को शेखी बघारने की आदत होती है। उनमें कोई काबिलियत हो या न हो, वे हर मिलने-जुलने वाले से अपनी

बड़ाई करने से नहीं चूकते। शेखी बघारने वालों से लोग कन्नी काटते हैं, पर उन्हें इसकी परवाह नहीं होती। वे अपनी आदत से बाज नहीं आते। मौका मिलते ही अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने से नहीं चूकते। शेखी बघारने की आदत बहुत बुरी है। ऐसी बातें सुनना किसी को अच्छा नहीं लगता। यह बात शेखी बघारने वाले लोगों को सोचनी चाहिए और शेखी बघारने की अपनी बुरी आदत से बाज आना चाहिए।

प्र. 4.

(1) नए – गुणवाचक विशेषण।

(2) (i) मेरे इर्द-गिर्द अनेक लोग खड़े थे।

(ii) बड़े बाबू धीरे-धीरे मुझे हिलाने लगे।

(3)

संधि शब्द	संधि-विच्छेद	संधि-भेद
प्रश्नोत्तर	**प्रश्न + उत्तर**	**स्वर संधि**

अथवा

दुर्बल	दुः + बल	**विसर्ग संधि**

(4)

सहायक क्रिया	मूल क्रिया
(i) दो	देना
(ii) गए	जाना

(5)

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
(i) उड़ना	उड़ाना	उड़वाना
(ii) सूखना	सुखाना	सुखवाना

(6) (i) मुँह फेरना।

अर्थ : उपेक्षा करना।

वाक्य : कर्मचारी अपनी माँग लेकर सेठ जी के पास जाते तो वे उनसे बात करने के बजाय मुँह फेर लेते।

(ii) दाँत कटी रोटी।

अर्थ : गहरी दोस्ती।

वाक्य : नेता जी और उस गुंडे में दाँत कटी रोटी थी।

अथवा

- मुहावरा : दो पाटों के बीच आना।

एक ओर गाँववाले तथा दूसरी ओर पुलिस; डाकू दो पाटों के बीच आ गए।

(7)

कारक चिह्न	कारक भेद
(i) छत पर	अधिकरण कारक
(ii) के लिए	संप्रदान कारक

(8) ''तो दूध न देने की सजा उसे लाठियों से दी गई?''

(9) (i) रचनात्मक कार्यों को लोक चेतना का माध्यम बनाया जा रहा है।

(ii) जहाँ यह टुकड़े-टुकड़े होकर बिकती है।

(iii) सामने से एक कार आई थी।

(10) (i) मिश्र वाक्य।

(ii) (1) नागर जी के पिता जी सरकारी कर्मचारी नहीं थे।

(2) अरे! कमरे से हारमोनियम उठा लाया।

(11) (i) धूल खोजने पर भी कहीं नहीं मिलती है।

(ii) इस संबंध में कुछ भाई अमेरिका का उदाहरण पेश करते हैं।

(iii) एक-एक करके सद्गुण सज्जन के पास चले आते हैं।

प्र. 5. (अ), (आ) तथा (इ)

उपयोजित लेखन की कृतियों के स्व-मूल्यमापन संबंधी

उपयोजित लेखन के प्रश्नों को हल करते हुए विद्यार्थियों को अपने विचार, अपनी भाषा में लिखने होते हैं। ये प्रश्न मुक्तोत्तरी प्रकार के प्रश्न हैं। इनके उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

नमूना कृतिपत्रिका में दिए गए ऐसे प्रश्नों के उत्तर अंक योजना को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी स्वयं चेक करें और अपने द्वारा लिखे गए उत्तरों को जाँचें। आवश्यकता हो तो विद्यार्थी अपने विषय-शिक्षक की सहायता लें।

उपयोजित लेखन के अधिक अभ्यास हेतु '**नवनीत हिंदी (LL) उपयोजित लेखन : कक्षा दसवीं**' में दिए गए उपयोजित लेखन के नमूनों का अध्ययन अवश्य करें।